श्री हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ **(१)**

रामदूत अतुलित बलधामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ **(२)**

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥ **(३)**

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥ **(४)**

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ **(५)**

शंकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग वंदन॥ **(६)**

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ **(७)**

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ **(८)**

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा॥ **(९)**

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥ **(१०)**

लाय सजीवन लखन जियाए।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाए॥ **(११)**

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ **(१२)**

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ **(१३)**

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥ **(१४)**

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ **(१५)**

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ **(१६)**

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना॥ **(१७)**

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ **(१८)**

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं॥ **(१९)**

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ **(२०)**

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ **(२१)**

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना॥ **(२२)**

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ **(२३)**

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥ **(२४)**

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ **(२५)**

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ **(२६)**

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा॥ **(२७)**

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै॥ **(२८)**

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥ **(२९)**

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥ **(३०)**

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥ **(३१)**

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥ **(३२)**

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥ **(३३)**

अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥ **(३४)**

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥ **(३५)**

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ **(३६)**

जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥ **(३७)**

जो शत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥ **(३८)**

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ **(३९)**

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥ **(४०)**

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

© Bhakti Hub | All Rights Reserved

https://bhaktihub.in

© bhaktihub.in